महाराष्ट्र साहित्य सभा, इन्दूर के शत संवत्सरी समापन समारोह के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. मराठी भाषा के सतत् संवर्धन के लिए 18 सितम्बर 1915 में स्थापित महाराष्ट्र साहित्य सभा का यह शताब्दी वर्ष है। आज इस संस्था के पास एक सदी का इतिहास है। 1915 से 2015 तक के 100 सालों के सफर को यदि हम देखें तो शायद हजारों लोग इस संस्था के सदस्य बने होंगे। आज यहां पच्चीस हजार के करीब किताबें हैं, पूर्व में भले ही कम रही होंगी, लेकिन कितनी बार, कितने घरों में यह साहित्य पहुंचा होगा। तब तो शायद अखबारों के साथ–साथ पठन–पाठन का यही जरिया था। यहां से पढ़कर उन्होंने कितना साहित्य सृजन किया होगा, उन्हें कितने नामवन्त लेखकों से प्रत्यक्ष मिलने का मौका मिला होगा, यहां के सदस्य ही बता सकते हैं। आज हमारे बीच युवा साहित्यकार भी हैं। साहित्यकार की दो ही उम्र होती है, या तो वे युवा होते हैं या वरिष्ठ। वे कल की गौरवशाली परम्परा आज नई पीढ़ी में भी आगे बढ़ा रहे हैं। आज का आयोजन कल के उन कालजयी साहित्यकारों को याद करने एवं नई पीढ़ी को जिम्मेदारी हस्तांतरित करने हेतु हम यहां एकत्रित हैं।

2. जब कोई संस्था 100 साल पुरानी हो जाती है, तब उसके इतिहास के पन्ने पलटकर देखो तो ऐसा लगता है कि जैसे हम वह सुनहरा बीता हुआ कल देख रहे हैं। फोटो के पुराने एलबम को देखते वक्त वे यादें फिर

से जीवन्त हो उठती हैं, वे भाव फिर दोहराने लगते हैं। प्रख्यात मराठी साहित्यकारों ने यहां इस संस्था के आयोजनों में अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराई है। यहां सवा सौ साल से अधिक पुरानी पुस्तकें भी हैं और इतना पुराना इतिहास भी। किसी संस्था को, उसकी सोच को इतने वर्षों तक बनाए रखना और फिर उसे सहेज–संवार कर नई पीढ़ी को हस्तांतरित करना, यह काम इस संस्था से जुड़े समर्पित लोगों ने निःस्वार्थ भाव से किया है। यह उनका ही कार्य था कि हमें अपने शहर इन्दौर को आचार्य प्र.के. अत्रे, रामू भैया दाते, वि.स. खांडेकर, ना.सी. फडके, ह.रा. महाजनी, ग. न्यं. माडखोलळर, ग.दि. माडगूळकर, कवि अनिल, वि.वा. शिरवाडकर (कुसुमाग्रज), सेतु माधव जैसे साहित्य महर्षियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

3. ये साहित्यकार अच्छा लिखते हैं, यह तो पढ़कर पता चल जाता है। लेकिन ऐसा वे लिख कैसे लेते हैं। उनकी सोच का विस्तार एवं दायरा इतना वृहद् कैसे है? इतना सादा जीवन जीते हुए वे ऐसा महान कार्य कैसे कर लेते हैं, यह उनसे मिलकर ही पता चलता है। उनकी प्रेरणा से कई लोगों ने सबक लिया है और अपने स्तर पर उन लोगों ने भी अपना अच्छा प्रयास किया है। साहित्य सभा ने हम सबके बीच संवाद स्थापित करने में उल्लेखनीय कार्य किया है।

4. यह संस्था रचनात्मक कार्य करती आई है। संस्था ने मराठी भाषा पढ़ने वाले विद्यार्थियों को आगे बढ़ने में भी सहयोग किया है। सन् 1960 के

दशक में प्राध्यापक श्री घाटे एवं श्री कुलकर्णी जी यहां एम.ए. (मराठी) के विद्यार्थियों को अपना मार्गदर्शन देते थे।

5. इन्दौर में नवम्बर 1926 में कविवर्य भा.रा. तांबे की अध्यक्षता में मराठी कवियों का पहला मराठी सम्मेलन आयोजित हुआ। पुणे, मुम्बई, जलगांव और ग्वालियर से कवियों के साथ–साथ श्रोतागण कवि सम्मेलन में भाग लेने आए। दूरी तो उतनी ही थी, पर साधन नहीं के बराबर थे। यह साहित्य के प्रति उनकी साधना थी। शायद तब से इनकी प्रेरणा न होती, तो आज इस रचनात्मकता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाता। इंदौर में सन् 1917 में नौवां, 1935 में 20वां और 2001 में 74वां अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन आयोजित हुआ था। साहित्य सभा को अपनी स्थापना के तुरंत पश्चात् ही मराठी साहित्य सम्मेलन करने का गौरव प्राप्त हुआ। 1947 में शारदोत्सव की शुरूआत हुई। अपवादों को छोड़ दो तो यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है। भाषा और साहित्य के लिए, रचनात्मक कार्य के लिए, ज्ञानवर्धन कला, कवि सम्मेलन, निबन्ध लेखन, कविता पाठ आदि स्पर्द्धाएं यहां आयोजित की जा रही हैं।

6. मध्य प्रदेश या तब के मध्य भारत में मराठी साहित्य सृजन की कार्य–परम्परा सन् 1861 से लगातार चल रही है। तब बालकृष्ण मल्हार हंस, एकनाथ शास्त्री करकंबकर आदि लोगों ने साहित्य का बखान किया। बाजीराव उत्तर को जीतते जा रहे थे और मल्हार राव होळकर के साथ मराठी भाषा का पदार्पण पूरे मालवा सूबे में हुआ। सन् 1880 के दशक में

इंदौर से पहली मराठी कादम्बरी 'बहारदानिष' का प्रकाशन किया गया। उज्जैन के श्री माधव डांगवाले ने करीब–करीब उसी अवधि में 'पिक्सी' कादम्बरी का प्रकाशन किया। सन् 1908 में वामनशास्त्री इस्लामपुरकर ने 'अविचारांचा परिणाम' यह कादम्बरी लिखी। सन् 1910 में श्रीमती कमलाबाई किबे ने 'राजकुमारी' लिखी। ये कादम्बरियां इतिहास के घटनाक्रम पर लिखी गई थीं। यह एक दोहरा इतिहास था। महाराष्ट्र साहित्य सभा द्वारा प्रकाशित शारदोत्सव 2014 के अवसर पर प्रकाशित मालविका में अपने संपादकीय में श्री सुधीर बापट जी ने इन घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा दिया है। वे आगे लिखते हैं कि श्रीमती रोहिणी ताई कुलकर्णी ने जो कादम्बरी लिखी थे, उस पर मराठी सिनेमा भी बनाया गया था। इंदौर के साथ–साथ उज्जैन, देवास भी साहित्य सृजन में आगे रहे हैं। देवास की डॉ. प्रफुल्लता जाधव ने ''गोकुळी'' नामक ऐतिहासिक कादम्बरी लिखी। लगभग सभी महिलाओं ने मराठी इतिहास को अपने शब्दों में पिरोने का कार्य किया है। ऐसे उदाहरण तब महाराष्ट्र में भी कम थे। श्री माधव सांठे जी ने 'ब्रहावर्त', जो पेशवाकालीन प्रसंगों पर आधारित एक ग्रंथ लिखा था, उसने महाराष्ट्र के बड़े–बड़े अखबारों में अपनी जगह बनाई है। राजकवि रा.अ. काळेले, राजकवि झोकरकर, सी.का. देव, अनंत पोत्दार जैसे साहित्यकारों की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले लोग इस परिसर में बैठे हैं तथा निरंतर लेखन करके शहर में मराठी भाषा का जो वट–वृक्ष इस संस्था के रूप में, रचनाओं के रूप में लगाया गया है, उसे निरंतर सींच रहे हैं।

7. आज आधुनिक तकनीक से साहित्य सृजन का स्वरूप बदल गया है। लोग ब्लॉग्स लिखते हैं। फेसबुक और ट्विटर पर साहित्य लिखते हैं। गूगल पर मराठी भाषा में भी टाइपिंग हो जाती है। ट्विटर पर हास्य–व्यंग्य प्रचलित हो रहा है। मराठी भाषा में विभिन्न विषयों पर असीमित कार्य हुआ हैं। लेकिन अब आधुनिक तकनीक की मदद से अब इसी पहुंच भी असीमित हो गई हैं। व.पु. काळे, पु.ल. देशपांडे ने हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में होने वाली घटनाओं के किस्सों को व्यंग्य के रूप में जो लिखा है, उससे हम काफी हंसते हैं और हंसते–हंसते दर्द भी दुआ बन जाता है। हिन्दी में शरद जोशी एवं हरिशंकर परसाई की भी यही जगह है। रोजमर्रा की जिन्दगी के साथ–साथ इतिहास को आज में जीने का विश्वास मराठी साहित्य को हमेशा से रहा है। श्रीमान् योगी, छावा, मृत्युंजय, पानीपत, महानायक जैसे जीवन–वृत्तांत मराठी भाषा के साथ–साथ अन्य भाषा के पाठकों के भी पसंदीदा हैं।

8. महाराष्ट्र के बाहर मराठी भाषा का हृदय हमारा इन्दौर और मालवा है। हम हिन्दी के साथ रहकर भी मराठी भाषा के लिए नई ऊर्जा का संचार कर रहे हैं। महाराष्ट्र से बाहर रहने वाले मराठी भाषी के लिए उसकी दो भाषाएं होती हैं। **हमारे लिए दोनों भाषाएं देवकी और यशोदा बन जाती हैं।** हर्ष का विषय है कि यहां से साहित्य सृजित होकर देश–दुनिया में जाता है। गौरव की बात है कि बाहर बसे साहित्यकार भी इन्दौर की इस रचनात्मकता और आतिथ्य सत्कार का सम्मान करने के लिए शहर में आते

हैं और इस माटी से जुड़ जाते हैं। आशा है कि भविष्य में भी सृजन का यह क्रम निरंतर एवं अनवरत जारी रहेगा। यहां आचार्य **प्र.के. अत्रे, रामू भैया दाते, वि.स. खांडेकर, ना.सी. फडके, ह.रा. महाजनी, ग.न्यं. माडखोलकर, ग.दि. माडगूळकर, कवि अनिल, वि.वा. शिरवाडकर (कुसुमाग्रज), सेतु माधव, मंगेश पाडगांवकर, शिवाजीराव भोंसले, गो.नी. दांडेकर, शांता शेळके, मधु मंगेश कर्णिक, द.मा. मिरासदार, य.दि.फडके, डॉ. आनंद यादव, प्रा. राम शोवाळकर, अरूणा ढेरे, सुधीर गाडगीळ और डॉ. रामचन्द्र देखणे** जैसे लोग आते रहेंगे।

9. मुझे खुशी है कि संस्थान अपने इतिहास को साथ लेकर भविष्य में आधुनिक भी होते जा रहा है। 1943 में जो वर्तमान भवन बनाया गया, 1967 में इसका विस्तार हुआ और 2001 में नवीनीकरण किया गया। संस्थान से साहित्य प्रेमी और मराठी भाषा का चिंतन करने वालों की बहुत अपेक्षा है। ग्रंथालय का और अधिक आधुनिकीकरण होना चाहिए। नई पीढ़ी के हाथों में इन किताबों को जाना चाहिए। **मराठी साहित्य का डॉक्यूमेंटेशन एवं डिजीटाइलेशन होना चाहिए। शहर में मराठी रंगमंच बहुत सक्रिय है और इस रंगमंच के अपने कई कलाकार देश– दुनिया में मराठी साहित्य के साथ हिन्दी के लिए भी अच्छा लेखन कार्य कर रहे हैं।** साहित्य और संगीत दोनों पर्यायवाची है।

10. संस्था से यही अपेक्षा की जाती है कि आप इस तरह साहित्य, संगीत और संस्कारों का सृजन करते रहेंगे। दीवान बहादुर कै. गो. रा. खांडेकर

जैसे लोगों द्वारा स्थापित इस संस्था का वट–वृक्ष और अधिक बड़ा होगा। धन्यवाद।